

JEFF BEZOS AND THE FUEL



JEFF BEZOS और ईंधन

SEMANTIC REALITY 2026 · SHAREHOLDERS 11

मेरी पहली सफलता: Bezos को उसकी यॉट में ईंधन भरवाने के लिए पैसे देना।

टेलीफ़ोन, जो कभी संचार का एक साधारण साधन था, धीरे-धीरे साझा करने, बात करने, संदेश भेजने का ज़रिया बन गया। और मोबाइल फ़ोन लैंडलाइन से आगे निकल गए। हर किसी को बात करनी थी। लोगों को बताना क्या था?

कि पति अभी घर पर है या नहीं और कब निकलेगा, ताकि पत्नी अपने प्रेमी को अंदर बुला सके। कोई ऐसा जिसे कोई नहीं जानता था। या वही पुराना पारिवारिक मित्र जो सप्ताहांत पर आता था।

फिर रिंगटोन हमेशा उस हर व्यक्ति के लिए डराने वाला संकेत होती थी जो कुछ असामान्य करने वाला होता। और फिर आई ख़ामोश मैसेजिंग: WhatsApp, Telegram, Signal, Messenger, Direct, Viber, WeChat, Skype। संदेश, तस्वीरें, वीडियो, हर तरह की स्थिति का आदान-प्रदान करने के लिए। और लंबे समय तक इसने न्यायिक अधिकारियों को भी अपने मामले बनाने और यह सुनिश्चित करने में मदद की कि दोषी बिना सज़ा के न छूटें।

लेकिन ठीक जब सब कुछ पूरी तरह काम करता लग रहा था, मैंने भी अपने दोस्तों को कहानियाँ भेजनी शुरू कीं, अपने अनुभव साझा करने और उन्हें मुस्कुराने और सोचने पर मजबूर करने के लिए। बस मैं Amazon नहीं था, और Pornhub भी नहीं। और असफलता एक पहले से तय सफलता की केवल पहली असली शुरुआत थी।

फिर, मेरी जानकारी के बिना, नेपल्स की एक महिला ने 300 कहानियों का एक संग्रह तैयार किया। एक दिन, फ़ोन पर, उसने मुझसे कहा: “मैं नेपल्स में अपने एक प्रकाशक मित्र से मिलने जा रही हूँ। मैं उसे कहानियाँ दूँगी ताकि किताब बने, फिर देखेंगे।”

मैं मुस्कुराया। लेकिन मेरा जवाब था: “जो भी हो, हम हमेशा सब कुछ आधा-आधा बाँटेंगे।”

उसने मुझे वैसे देखा जैसे एक माँ अपने सबसे छोटे बच्चे को देखती है, जिसे वह सोचती है कि सबसे ज़्यादा स्नेह चाहिए, सिर्फ़ इसलिए कि वह सबसे आखिर में पैदा हुआ। लेकिन केवल माँएँ जानती हैं कि ध्यान की बात आए तो सबसे छोटा सबसे पहले आता है।

तीन महीने बाद, उसने फ़ोन करके बताया कि प्रकाशक ने परियोजना ठुकरा दी है। उसे दोहराव मिले, वेब पर जानकारी दिखी। कुछ शब्दों में, पंक्तियों के बीच, वह मुझसे कह रहा था कि मैं एक धोखेबाज़ हूँ जो नक़ल करता है। उसने यह कहकर सफ़ाई दी कि यह ऐसा साहित्य है जो आज के बाज़ार के लायक नहीं, अग्रणी, कुछ ऐसा जो वह नहीं छापेगा।

तो मैंने अपनी दोस्त से उसकी फ़ाइल की एक प्रति माँगी, जिसमें मेरी 300 कहानियाँ थीं। उसने बताया कि बिजली के एक तेज़ झटके ने उसकी हार्ड ड्राइव जला दी है और अब उसके पास कोई प्रति नहीं है।

मैंने उसका धन्यवाद किया। और 15 दिनों में मैंने सारी कहानियाँ फिर से लिख डालीं, उस धैर्य के साथ जो हमेशा मेरी पहचान रहा है और शुरुआत के लिए केवल एक विचार के साथ: अस्वीकृति बस बेहतर करने और ज़्यादा करने की एक पदोन्नति है।

मैं एक इतालवी प्रकाशक के पास गया, जिसने मेरी पहली किताब तैयार और प्रकाशित की: बिना किसी अनुभव के, मैंने उन लोगों की सलाह ली जो मुझसे ज़्यादा समय से लिख रहे थे, 1,500 यूरो चुकाए और अनुबंध में तय 50 मुफ़्त प्रतियाँ पाई। किताब सभी प्रकाशन चैनलों से निकली और आज भी उपलब्ध है, हालाँकि, क़ानूनी माँगों के बावजूद, मुझे कभी कोई रॉयल्टी नहीं मिली।

तभी मुझे समझ आने लगा कि डाकू घोड़ागाड़ी से उतर आए थे और, बिना किसी के ध्यान दिए या समझे, दफ़्तरों में जम गए थे, खुद को प्रकाशक कहते हुए। मैं केवल उन प्रकाशकों की बात कर रहा हूँ जिनसे मेरा सीधा वास्ता पड़ा, बिना उनके नाम लिए।

मुझे अपने वकील की सलाह माननी पड़ती है, क्योंकि अगर मैंने लिखा होता "सारे प्रकाशक," तो पहले मुक़दमे आ जाते। मैं उनका खेल खेल रहा होता, अपना नहीं। हाहाहाहाहा।

मुझे लगा यह इतालवी घटना है, इसलिए मैं अमेरिका गया, जहाँ मैंने 150 से 210 पृष्ठों की 14 किताबें प्रकाशित कीं, जो आज भी बिक्री पर हैं, Amazon पर भी। लेकिन मैंने कभी कोई रॉयल्टी नहीं देखी, और वितरण की अनुमति वापस लेने के बाद भी किताबें बिक्री पर बनी रहीं।

लेकिन कैलाब्रियाई होने के नाते, ज़िद्दी, मैंने और पुष्टि खोजी, और जिन दूसरे प्रकाशकों से मेरा सीधा वास्ता पड़ा, सबने एक ही ढर्रा अपनाया: उन्होंने किताबें लीं, प्रकाशित कीं और पैसे वसूले, मुझे रॉयल्टी नहीं दी और प्रकाशन नहीं हटाए, एक स्वतंत्र लेखक के रूप में मेरे अनुरोधों के बावजूद।

फिर एक दिन मैं AMAZON पहुँचा: प्रकाशन का बॉस।

यहाँ खेल लगभग तुरंत आखिरी पड़ाव पर पहुँच गया। जब मैं 7 दिनों में 40 किताबें प्रकाशित कर चुका था, किताब नंबर 41 प्रकाशित हुई और, सिर्फ़ 1 घंटे बाद, 10 ईमेल आए। Amazon ने मुझ पर अपने एल्गोरिदम से छेड़छाड़ का आरोप लगाया, मेरा खाता बंद कर दिया और कहा कि मेरी प्रकाशित किताबों पर वह कोई रॉयल्टी नहीं देगा। संक्षेप में, मेरे शब्दों में, मैंने उनके एल्गोरिदम को उड़ा दिया था। लेकिन बिक्री मैंने गढ़ी नहीं थी: मेरे 12 दोस्तों ने, जिन्हें नाम और उपनाम से पहचाना जा सकता है, मेरी किताबें ठीक इसलिए खरीदी थीं ताकि मैं बिक्री की ठोस जाँच कर सकूँ। और, जैसा मैंने अनुभव किया और दर्ज किया, खाता बंद होने के बाद भी मेरी किताबें 60 दिन और उपलब्ध रहीं और बिकती रहीं, बिना संबंधित रॉयल्टी मुझे दिए। मेरी पहली सफलता: Bezos को उसकी यॉट में ईंधन भरवाने के लिए पैसे देना।

फिर, पहले जो हुआ उसकी पुष्टि के लिए, मैंने एक यूरोपीय प्रकाशक, STREETLIB, के साथ एक परीक्षण किया, जिसने 30 दिनों में छह भाषाओं में 100 ई-बुक प्रकाशित कीं। वे तुरंत सभी यूरोपीय बाज़ारों और विश्वविद्यालयों तक पहुँचीं, और 50 दिनों से कम में 13.90 यूरो पर 1,365 से ज़्यादा प्रतियाँ बिकीं।

जब मैंने और प्रकाशित करना शुरू किया, तो उन्होंने बताया कि पहली 100 ई-बुक के ISBN का भुगतान वे कर रहे थे और अगली किताबों का खर्च मुझे उठाना होगा।

उन्होंने यह भी पूछा कि क्या मैं प्रस्ताव को और आकर्षक बनाने के लिए वितरण दूसरे विक्रेताओं तक बढ़ाना चाहता हूँ।

उनका दावा था कि ISBN लेखक की रक्षा के लिए होते हैं। लेकिन ISBN किसी प्रकाशन के एक संस्करण की पहचान करता है; यह कॉपीराइट की रक्षा नहीं करता। मेरे लिए, इसे लेखक की सुरक्षा बताना झूठ था। और ISBN प्रबंधन और प्रकाशन के इर्द-गिर्द बना धंधा, जैसा मैंने अनुभव किया, आखिरकार प्रकाशक के हितों की सेवा करता था, मेरे नहीं।

मैंने एक प्रमाणित ईमेल भेजा जिसमें कहा कि सारी किताबें बाज़ार से हटा दें और वे सारा पैसा रख सकते हैं, पहले से कमाई गई रॉयल्टी और आगे बनने वाली भी, ताकि वे अपने धंधे में पैसों की एक अच्छी खुराक डाल सकें।

और फिर मैंने सब कुछ खुद करने का फैसला किया। एक शुरुआती अभ्यास वेबसाइट के बाद, मौजूदा साइट का जन्म हुआ, अब भी एक स्वतंत्र लेखक के रूप में, बिना प्रायोजकों और बिना सुरक्षा के।

यह स्कूल जाने जैसा था, लेकिन मैं सिर्फ 60 का था और समझना चाहता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। फिर मेरा सामना ALPHABET से हुआ, लेकिन मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि ये भाड़ में जाएँ कौन हैं। मैंने सोचा यह किसी भारतीय का चलाया हुआ अनपढ़ों का स्कूल है, और आखिर मैं पूरी तरह ग़लत भी नहीं था, क्योंकि मेरी यात्रा में, अगर मुझे सीखना था, तो मुझे बाइनरी कोड (0-1) का इस्तेमाल करना था, मानवीय दशमलव प्रणाली (0-1-2-3-4-5-6-7-8-9) का नहीं: सफल होने का एकमात्र तरीका उल्टा साबित करना था।

एक किताब के भीतर एक कथा होती है, एक कहानी, एक घटना, निर्माण, लेआउट, आवरण, अनुवाद। और फिर?

वेब, अगर वह आप पर ध्यान दे, अगर वह आपको गंभीरता से ले, अगर उसे लगे कि आप डाकू नहीं हैं, तो आपको मूल्य देता है और अपने समय पर आपको अनुक्रमित करता है। और फिर क्या होता है?

वेब कौन है?

BING, GOOGLE, YANDEX, YAHOO। अगर आप वहाँ हैं, तो आप सचमुच कह सकते हैं कि हर वह घर जहाँ सुबह नाश्ते के लिए दूध उबलता है, वही घर है जो आपको पढ़ता है।

वरना आपको सोशल मीडिया से संतोष करना पड़ता है, जहाँ लोग अपने पड़ोसी के क्रिस्से सुनाते हैं। वही खबर बनती है।

अगर फिर आप बेचना चाहते हैं, तो वसूलने से पहले चुकाना पड़ता है। यह व्यापार का उल्टा लगता है, लेकिन यह बस बाइनरी कोड है।

आप ADS अभियानों, विज्ञापन, सोशल मीडिया, सलाहकारों, एजेंसियों से शुरू करते हैं, और जो आप बनाते हैं उसे दूसरों के साथ बाँटते हैं, बिना यह पक्का जाने कि आखिर में आपकी जेब में क्या आएगा।

यह ऐसा है जैसे आप कैसीनो जा रहे हों: आप जानते हैं कि कितने पैसे लेकर अंदर जाते हैं, लेकिन कभी नहीं जान पाएँगे कि कितने लेकर बाहर आएँगे, और कैसीनो का मालिक कभी नहीं हारता।

अगर आप बेचते नहीं और अपना काम मुफ्त दे देते हैं, तो आप एक समस्या हैं। और आप कितनी बड़ी समस्या हैं, यह केवल आपके रचे काम के आकार से मापा जाता है, आप उसे कैसे रचते हैं और कब रचते हैं।

और आपकी कथा-कला का मूल्य, वह मूल्य जो आप सोचते हैं आपको अपना प्रचार करने में मदद करेगा, भुला दिया जाता है। तब भी जब सामग्री की संपादकीय गुणवत्ता 10 में से 9 हो।

आप ढाँचे में फिट नहीं होते। यह ऐसा है जैसे आप जूतों की दुकान में जाकर 99 नंबर माँगें, जबकि वेब और पूरा प्रकाशन उद्योग ज़्यादा से ज़्यादा 50 नंबर तक जाता है, और वह भी सबके लिए नहीं।

और फिर आप सलाह खोजते हैं। आप अकेले हैं। आपका परिवार दुश्मन है क्योंकि वह समझता नहीं, आपके दोस्त बस सद्भावना के भेस में एक शानदार ईर्ष्या हैं, और आपके दुश्मन असल में वे दर्शक हैं जो चुपचाप आपकी प्रशंसा करते हैं।

फिर, मूर्खता से, आप एआई की बातों में शरण खोजते हैं। आप बुद्धिमान हैं; आप जानते हैं ये प्रणालियाँ कैसे काम करती हैं। आपके पास उनमें से 10 हैं यह देखने के लिए कि उनके पैटर्न मेल खाते हैं या नहीं, और कुछ दिन वे आपको बताती हैं कि आप क्यों आगे बढ़ते रहें और कुछ दिन यह कि आप आगे नहीं बढ़ सकते,

क्योंकि हर कोई ताक़तवरों से डरता है और कोई व्यवस्था के खिलाफ़ खड़ा नहीं होता।

अगर सचमुच ऐसा होता, तो कभी युद्ध ही न होते, वे एकमात्र कर्म जो हमें शांति की गारंटी देते हैं। आप सोचेंगे यह बेतुका है: बस मानव इतिहास फिर से पढ़िए, और आप हैरान होंगे कि यह वैसा ही है जैसा मैं आपसे कहता हूँ।

यह कभी सचमुच आसान नहीं था, लेकिन हमेशा याद रखिए कि यह कभी असंभव भी नहीं था, और औरतें इसे हमेशा पहचानती हैं, और केवल उन लोगों में जो सक्षम हैं।

Ferdinando Frega
BLADEFREGA · लेखक Nando